टेलीफोन

निकोलाई नोसोव

मिश्का को और मुझे खिलौनों की दुकान में एक दिन एक बड़ा बढ़िया नया खिलौना नज़र आया. यह एक टेलीफोन सेट था, जो बिलकुल असली की तरह ही काम करता था. लकड़ी के एक बड़े बक्से में दो टेलीफोन और तार का एक लच्छा बड़ी अच्छी तरह रखे हुए थे. सामान बेचनेवाली लड़की ने हमें बताया कि एक ही मकान के अलग-अलग फ्लैटों में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है. एक टेलीफोन एक फ्लैट में रख लो और दूसरा दूसरे में और उन्हें तार से जोड़ दो, बस!

मिश्का और मैं - दोनों - एक ही मकान में रहते हैं, मेरा फ्लैट उसके फ्लैट से एक मंज़िल ऊपर है. हमने सोचा कि यह बात तो बड़ी मज़ेदार रहेगी कि जब चाहा, एक-दूसरे को टेलीफोन कर लिया.

"इसके अलावा," मिश्का ने कहा, "बात यह भी है कि यह कोई ऐसा मामूली खिलौना नहीं है कि जो टूट गया और फेंक दिया. यह बड़े काम का खिलौना है."

"हाँ, यह तो है," मैंने कहा, "इससे जीने के चढ़े-उतरे बिना अपने पड़ोसी से बात की जा सकती है."

"सचमुच," मिश्का ने बड़ी बेचैनी के साथ कहा, "बड़े काम की चीज़ है. घर बैठे मन चाहे जितनी बातें कर लो."

हमने टेलीफोन खरीदने के लिए पैसा बचाने की ठान ली. दो हफ्ते तक हमने न आइसक्रीम खाई, न फ़िल्में देखीं और दो हफ्ते बीतते-बीतते हमारे पास टेलीफ़ोन खरीदने लायक पैसे इकट्ठे हो गये.

हम दुकान से बक्सा लिए दौड़े-दौड़े घर आये. हमने एक टेलीफोन मेरे फ्लैट में लगा लिया और दूसरा मिश्का के फ्लैट में और उसका तार मेरी खिड़की से मिश्का के कमरे में निकाल दिया.

"चलो," मिश्का ने कहा, "इसकी आजमाइश भी कर लें. तुम ऊपर लपको और मेरे फोन का इंतज़ार करो."

मैं लपककर घर गया और रिसीवर उठाया. मिश्का के चिल्लाने की आवाज़ आने भी लगी थी.

"हेलो! हेलो!"

मैंने पूरे ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "हेलो!"

"मेरी आवाज़ आ रही है?" मिश्का ने चिल्लाकर पूछा.

"हाँ, तुम्हारी आवाज़ आ रही है. क्या तुम मेरी आवाज़ सुन रहे हो?"

"बहुत अच्छी तरह. और तुम?"

"मैं भी. भई वाह, हा! हा! मेरी हंसी सुन रहे हो?"

"हा-हा! हा! हा! हा! सुन रहे हो?"

"हाँ! अच्छा सुनो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ."

वो दौड़ता हुआ मेरे कमरे में आया. हम ख़ुशी के मारे एक-दूसरे से लिपट गए.

"खुश हो कि हमारे पास टेलीफोन है? है न बढ़िया बात?"

"है तो," मैंने कहा.

"अच्छा, अब मैं जाता हूँ और जाकर तुम्हें फिर फोन करता हूँ."

वह वापस भाग गया. फोन फिर बजा. मैंने रिसीवर उठाया.

"हेलो!“

"मेरी आवाज सुन रहे हो?"

"खूब अच्छी तरह."

"सच?"

"हाँ-हाँ, सुन रहा हूँ."

"मैं भी. अच्छा, चलो अब बातें करें."

"हाँ, बातें करनी चाहिए. किस बारे में बात करें?"

"अरे, किसी भी बात के बारे में. तुम खुश हो न कि हमने टेलीफोन खरीद लिया?"

"बहुत.“

"इसे न खरीदते तो बहुत बुरा होता. है न?"

"बहुत."

"तो?"

"तो क्या?"

"तुम कुछ क्यों नहीं कहते?"

"तुम ही कुछ कहो."

"समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ," मिश्का ने कहा. "हमेशा यही बात होती है. जब बात करने की ज़रुरत होती है, तो समझ में नहीं आता कि क्या बात करें. लेकिन जब यह पता होता है कि बात नहीं करनी है, तो चुप रहा नहीं जाता.”

मैंने कहा, "सुनो, मैं फोन बंद करके कुछ देर सोचता हूँ. कहने लायक कोई बात दिमाग में आई, तो मैं तुम्हें फोन कर दूंगा."

"ठीक है."

मैंने रिसीवर रख दिया और सोचने लगा. अचानक फोन बजा. मैंने रिसीवर उठाया.

"तुमने कुछ सोचा?" मिश्का ने पूछा.

"अभी नहीं. और तुमने?"

"नहीं, मैंने कुछ नहीं सोचा है."

"फिर तुमने फोन किसलिए किया?"

"मैंने सोचा कि शायद तुमने कुछ सोच लिया हो."

"मैंने सोच लिया होता, तो तुम्हें फोन कर देता."

मैने सोचा कि तुम शायद कभी सोचो भी नहीं."

"मुझे क्या तुम गधा समझते हो?"

"क्या मैंने यह कहा कि तुम गधे हो?"

"फिर तुमने क्या कहा था?"

"कुछ नहीं. मैंने कहा कि तुम गधे नहीं हो."

"ठीक है यार, बस भी करो. गधे के बारे में काफी हुआ. अब बेकार बातें करने के बजाए अपनी पढाई करनी चाहिए."

"हाँ, ऐसा ही करना चाहिए."

"मैंने फोन बंद कर दिया और पढ़ाई करने बैठ गया. अभी मैंने किताब खोली ही थी कि फोन बज उठा.

"सुनो मैं फोन पर गाऊंगा और पियानो बजाऊंगा."

"ठीक है."

मुझे घर्राने जैसी आवाज़ सुनाई दी, फिर पियानो के पेडल को दबाए जाने की और फिर अचानक एक ऐसी आवाज़ ने, जो किसी भी तरह मिश्का की नहीं थी, गाना शुरू किया.

बचपन के दिन भी क्या दिन थे

भई वाह - क्या बात है! मुझे अचरज होने लगा. भला मिश्का ने ऐसा गाना कहाँ से सीख लिया?

तभी मिश्का आ गया. हंसी के मारे उसकी बत्तीसी निकल रही थी.

"यही समझे थे न कि मैं गा रहा हूँ? यह ग्रामोफ़ोन की आवाज़ है. ज़रा मैं भी तो सुनूं."

मैंने रिसीवर उसे दे दिया. वह कुछ देर तक सुनता रहा, फिर उसने अचानक बड़ी जल्दी से रिसीवर को पटका और नीचे भागा. मैंने रिसीवर अपने कान से लगाया. बड़ी तेज़ सन-सन और घर्र-घर्र की आवाज़ सुनाई दी. रिकार्ड पूरा चल गया होगा.

मैं अपनी पढ़ाई करने बैठ गया. फोन बज उठा. मैंने रिसीवर उठाया.

"भौं! भौं!" मेरे कान से आवाज़ आई.

"भौंक क्यों रहे हो?"

"मैं नहीं भौंक रहा हूँ. यह अपना लैडी है. उसके रिसीवर पर मुंह मारने की आवाज़ आ रही है?"

"हाँ."

"मैं रिसीवर उसकी थुथनी से भिड़ाए जा रहा हूँ और वह उस पर दांत चला रहा है."

"वह तुम्हारे फोन को चबा डालेगा."

"अरे नहीं, ऐसी कोई बात नहीं होगी. यह लोहे का बना है. उफ़! मुझे काट लिया इसने अभी. दुत, बदमाश कुत्ते, उतर नीचे! कैसे काटा मुझे! ले! (भौं! भौं!) नालायक कहीं के! इसने मुझे काट लिया था, तुम्हें सुनाई दिया?"

"हाँ," मैंने कहा.

मैं फिर पढ़ने बैठ गया. लेकिन अगले ही मिनट फोन फिर बज उठा. इस बार रिसीवर में बड़ी तेज़ सन-सन सुनाई दी.

"यह क्या है?"

"मक्खी."

"कहाँ?"

"मैंने इसे रिसीवर के सामने पकड़ रखा है और यह अपनी पंख चला रही है."

मिश्का और मैं दिन भर, एक-दूसरे को फोन करते रहे. हमने तरह-तरह की बातें निकालीं - हमने गाने गाए, चिल्लाए, गरजे, बिल्ली की बोली बोले, फुसफुसाए - हर की बात सुनी जा सकती थी. मुझे अपनी पढाई ख़त्म करते-करते काफी देर हो गई. सोने से पहले मैंने मिश्का को फोन करने की सोची.

मैंने फोन किया, लेकिन कोई जवाब न मिला.

मुझे हैरत हुई कि क्या बात है. क्या उसके टेलीफोन ने काम करना बंद भी कर दिया है?

मैंने फिर फोन किया, लेकिन कोई जवाब न आया. मैं नीचे लपका, और मानें न मानें, देखा कि मिश्का अपने टेलीफोन के टुकड़े-टुकड़े अलग कर रहा है! उसने बैटरी निकाल ली थी, घंटी अलग कर दी थी और अब रिसीवर को खोलने वाला था.

"अरे!" मैंने कहा. "टेलीफोन को क्यों तोड़ रहे हो?"

"मैं नहीं तोड़ रहा हूँ. मैं तो बस यह देखने के लिए इसे खोल रहा हूँ कि यह कैसे बना है. मैं इसे फिर जोड़ दूंगा."

"तुमसे यह नहीं जोड़ा जायेगा. तुम्हें जोड़ना आता नहीं."

"कौन कहता है कि मैं नहीं जानता? यह तो एकदम आसान है."

उसने रिसीवर के पेंच खोले, धातु के कुछ टुकड़े निकाले और भीतर की एक गोल प्लेट को खोलने लगा. प्लेट उखाड़कर उछल पड़ी और थोड़ा सा काला पाउडर बिखर गया. मिश्का घबरा गया और पाउडर को रिसीवर में फिर डालने की कोशिश करने लगा.

"तुम माने नहीं और उसे तोड़ ही दिया न?" मैंने कहा.

"यह कोई बात नहीं. मैं इसे चुटकी, बजाते-बजाते जोड़ सकता हूँ!"

मिश्का उस पर लगा ही रहा, पर काम इतना आसान न था, जितना उसने सोचा था, क्योंकि पेंच बेहद छोटे थे और उन्हें ठीक जगह लगाना बड़ा मुश्किल था. आखिर धातु के एक ज़रा से टुकड़े और दो पेंचों के शिव बाकी सभी चीज़ों को उसने फिर जोड़ दिया.

"यह क्या है? मैंने उससे पूछा.

"मारे गए! इन्हें लगाना तो मैं भूल ही गया," मिश्का बोला. "कितनी बेवकूफी की बात है! इन्हें भीतर ही कसा जाना चाहिए था. अब मुझे सारे के सारे को फिर खोलना पड़ेगा."

"ठीक है," मैंने कहा. "मैं घर जा रहा हूँ. यह ख़त्म हो जाए, तो मुझे फोन कर लेना."

मैं घर चला गया और इंतज़ार करने लगा. इंतज़ार करते-करते मैं थक गया, पर फोन नहीं आया. आखिर मैं सो गया.

सुबह टेलीफोन इतने ज़ोरों से बजा कि एक बार तो मुझे यह लगा कि जैसे घर में आग लग गई है. मैं बिस्तर से उछला, रिसीवर झपटा और चिल्लाया :

"हेलो!"

"तुम इस तरह से घुरघुरा क्यों रहे हो?"

"मैं तो नहीं घुरघुरा रहा."

"घुरघुराना बंद करो और ढंग से बात करो," मिश्का ने चिल्लाकर कहा. आवाज़ से ही वह बेहद नाराज़ लगता था.

"लेकिन में ढंग से ही तो बात कर रहा हूँ. मुझे घुरघुराने की क्या पड़ी है?"

"जोकर मत बनो. कम-से-कम यह तो मैं मान ही नहीं सकता कि तुम्हारे पास कोई सूअर भी है."

"लेकिन यहाँ कोई सूअर नहीं है, मैं कह जो रहा हूँ," मैंने भी तैश में आते हुए ज़ोर से कहा.

मिश्का ने कुछ नहीं कहा.

मिनट भर में ही वह मेरे कमरे में आ धमका.

"फोन पर सूअर की बोली बोलने की क्या तुक है?"

"मैंने ऐसी कोई बात नहीं की."

"मुझे तुम्हारी आवाज़ बिलकुल साफ़ सुनाई दी थी."

"मैं भला सूअरों की बोली क्यों बोलने लगा?"

"मुझे के मालूम? मुझे तो यही मालूम है कि कोई मेरे कानों में घुरघुरा रहा था. जाओ, नीचे जाकर खुद देख लो."

मैं नीचे उसके कमरे में गया, उसे फोन किया और चिल्लाया :

"हेलो!"

"घुर्र-घुर्र-घुर्र-घुर्र!" बदले में यही सुनाई दिया. मेरी समझ में आ गया कि क्या बात है और मैं मिश्का को बताने के लिए लपका.

"यह सब तुम्हारी ही करनी है," मैंने कहा. "तुमने हाथ लगाकर टेलीफोन का सत्यानास कर डाला है."

"सो कैसे?"

"तुमने जब रिसीवर को खोला था, तभी उसमें कुछ गड़बड़ कर दी थी."

"मैंने उसे गलत जोड़ा होगा," मिश्का ने मंज़ूर किया. "मुझे उसकी मरम्मत करनी होगी."

"तुम मरम्मत कैसे करोगे?"

"मैं तुम्हारे टेलीफोन को खोल कर देखूँगा कि वह कैसे बना है."

"जी नहीं, आप उसे हाथ भी नहीं लगाएंगे! मैं तुम्हें अपने टेलीफोन क कबाड़ा करने नहीं दूंगा."

"घबराओ मत. मैं बहुत ध्यान से खोलूँगा. अगर मैंने टेलीफोन सुधारा नहीं, तो हम उसे बिलकुल भी इस्तेमाल न कर सकेंगे."

मुझे उसके बात माननी पड़ी और उसने तुरंत अपना काम शुरू कर दिया. वह घंटों उसी में उलझा रहा और जब उसने टेलीफोन की "मरम्मत" पूरी की, तो उसने पूरी तरह से काम करना बंद कर दिया. अब तो उसका घुरघुराना भी रुक गया था.

"अब हम क्या करेंगे?" मैंने कहा.

"मैं बताऊं?" मिश्का ने कहा. "चलो, दुकान चलकर उनसे इसकी मरम्मत करने के लिए कहते हैं."

हम दुकान पर गए, मगर दुकानवालों ने कहा कि वे टेलीफोनों की मरम्मत नहीं करते और न ही वे यह बता सके कि हम कहाँ मरम्मत करवा सकते हैं. सारे दिन हमें बहुत बुरा लगा. तभी मिश्का को एक बात सूझी.

"हम तो गधे हैं! हम एक-दूसरे को तार कर सकते हैं."

"कैसे?"

"अरे डैश-डॉट से. घंटी तो अभी भी बजती ही है. हम इसको काम में ला सकते यहीं. छोटी घंटी का मतलब है डॉट और लम्बी का डैश. हम मोर्स प्रणाली सीखकर एक-दूसरे को सन्देश भेज सकते हैं."

हमने मोर्स प्रणाली को सीखना शुरू किया - “A" के लिए एक डॉट और एक डैश, “B" के लिए एक डैश और तीन डॉट, “C" के लिए एक डॉट और तीन डैश, आदि-आदि. जल्दी ही हमने पूरी की पूरी वर्णमाला सीख ली और सन्देश भेजने लगे. शुरू-शुरू में रफ़्तार बहुत धीमी थी, लेकिन कुछ समय बाद हम अपनी घंटी असली तार-बाबुओं की ही तरह टिपटिपाने लगे. यह टेलीफोन से भी ज़्यादा मज़ेदार था. लेकिन यह सिलसिला ज़्यादा दिन नहीं चला. एक दिन मैंने सुबह मिश्का को सन्देश भेजा, पर जवाब न मिला. मैंने सोचा वो सो रहा है. इसलिए मैंने कुछ देर बाद फिर सन्देश भेजा, लेकिन अब भी जवाब न मिला. मैंने नीचे आकर उसका दरवाज़ा खटखटाया. मिश्का ने दरवाज़ा खोला.

"आगे से खटखटाने की ज़रुरत नहीं. तुम घंटी बजा सकते हो."

उसने दरवाज़े पर लगे एक बटन की ओर इशारा किए.

"यह क्या है?"

"घंटी."

"हाँ, हाँ, हाँको!"

"हाँ, यह बिजली की घंटी है. अब से तुम दरवाज़ा खटखटाने के बजाए यह घंटी बजा सकते हो.“

"कहाँ से लाए इसे तुम?"

"मैंने इसे आप बनाया है."

"कैसे?"

"मैंने इसे टेलीफोन से बनाया है."

"क्या?"

"हाँ, मैंने टेलीफोन की घंटी निकाल ली. बटन भी. मैंने उसकी बैटरी भी निकाल ली. खिलोने को रखने की क्या तुक, जब उससे कोई काम की चीज़ बनाई जा सकती है."

"लेकिन तुम्हें टेलीफोन तोड़ने का कोई अधिकार न था," मैंने कहा.

"क्यों नहीं था? मैंने अपना ही तोड़ा है, तुम्हारा तो नहीं."

"ठीक है, लेकिन टेलीफोन हम दोनों का है. अगर मुझे मालूम होता कि तुम उसके टुकड़े-टुकड़े कर दोगे, तो मैं तुमसे साझा करके उसे नहीं लाता. मुझे ऐसा टेलीफोन नहीं चाहिए, जो काम न करे."

"तुम्हें टेलीफोन की ज़रुरत ही नहीं है. हम एक-दूसरे से कोई इतनी दूर नहीं रहते. अगर तुम मुझसे बात करना चाहो, तो तुम नीचे आ सकते हो.“

"मैं तुमसे अब कभी बात करना चाहता ही नहीं," मैंने कहा और चला आया.

मैं उससे इतना नाराज़ था कि पूरे तीन दिन मैंने उससे बात नहीं की. अकेले मुझे बहुत अकेलापन लग रहा था, इसलिए मैंने अपने टेलीफोन को खोला और उससे भी दरवाज़े की घंटी बना ली. लेकिन मैंने मिश्का की तरह नहीं किया. मैंने अपनी घंटी ढंग से बनाई. मैंने बैटरी को दरवाज़े के पास एक अलमारी में रखा और उससे दीवार के साथ-साथ एक तार, घंटी और बटन तक ले गया. मैंने बटन को अच्छी तरह कस दिया, जिससे वह मिश्का के बटन की तरह कील पर न लटका रहे. माँ और पिताजी ने भी इतनी सफाई से किये गए काम के लिए मुझे शाबाशी दी."

मैं मिश्का को घंटी के बारे में बताने के लिए नीचे गया.

मैंने उसके दरवाज़े पर लगे बटन को दबाया, लेकिन किसी ने जवाब न दिया. मैंने उसे कई बार दबाया, पर उसके बजने की आवाज़ न सुनाई दी. इसलिए मैंने दरवाज़ा खटखटाया. मिश्का ने दरवाज़ा खोला.

"तुम्हारी घंटी को क्या हुआ? बजती नहीं?"

"नहीं वह खराब है."

"क्यों, क्या खराबी है?"

"मैंने बैटरी को खोल दिया."

"क्या किया!"

"हाँ, मैं देखना चाहता था कि वह किस चीज़ की बनी है."

"टेलीफोन और घंटी के बिना तुम क्या करोगे?" मैंने उससे पूछा.

"कोई बात नहीं, मैं किसी तरह काम चला लूँगा," उसने ठंडी सांस लेते हुए जवाब दिया.

मैं काफी परेशानी के साथ घर लौट आया. मिश्का ऐसी बातें क्यों करता है? यह हर चीज़ को क्यों तोड़ देता है? मैं उसके लिए बहुत दुखी था.

उस रात मैं हमारे टेलीफोन और उससे बनाई घंटी के बारे में सोचता-सोचता काफी देर तक सो नहीं सका. फिर मैं बिजली के बारे में और इस बारे में सोचने लगा कि बैटरियों में बिजली कहाँ से आती है. हर कोई गहरी नींद में सो रहा था, लेकिन मैं इन सब बातों को सोचता जाग रहा था. कुछ देर बाद मैं उठा, बिजली जलाई, अलमारी में अपनी बैटरी निकाली और उसे तोड़कर खोल लिया. उसमें कोई पानी जैसी चीज़ थी, जिसमें कपडे में लिपटी एक छोटी सी काली छड़ पड़ी हुई थी! तो यह बात थी! बिजली इस पानी जैसी चीज़ से आ रही थी. मैंने बैटरी को होशियारी के साथ वापस अलमारी में रख दिया और जाकर बिस्तर पर लेट गया. मुझे तुरंत नींद आ गई.

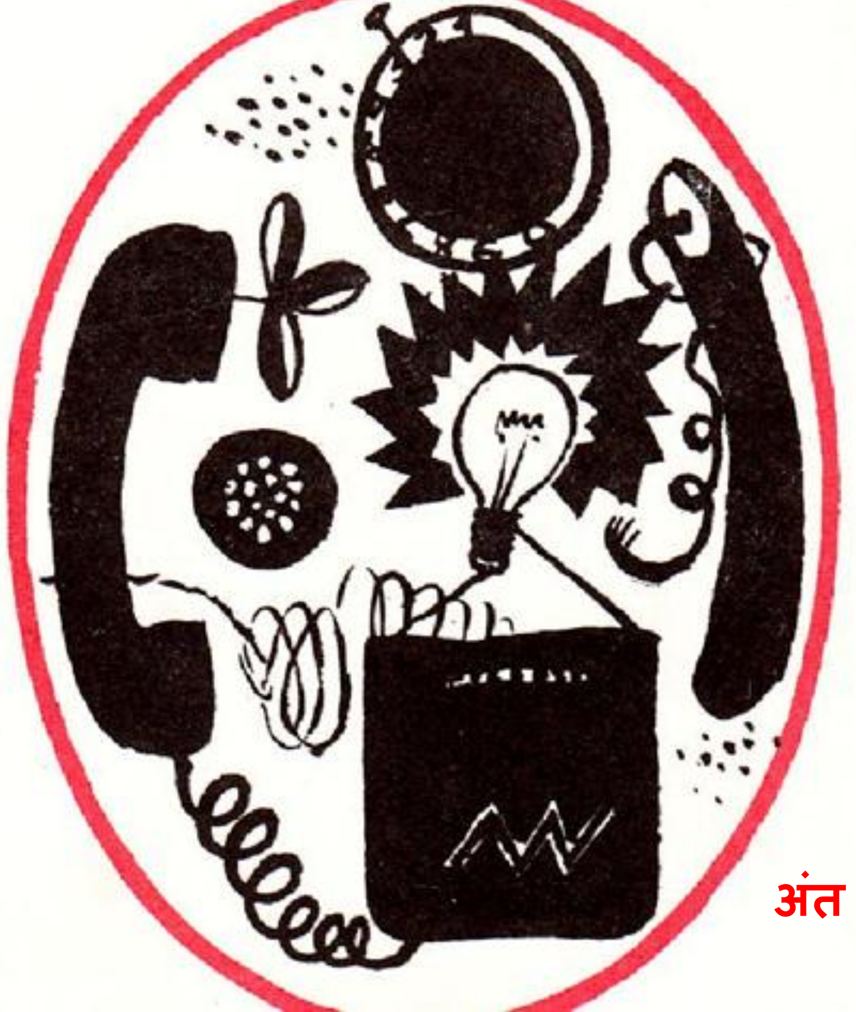

अंत